स् भो विव /एफ़ बी o / 15328 — चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं विवको बाटो मैंटल, 2-के / 44 बी.पी. एन.ब्राई.टी., फरीदाबाद, के श्रमिक श्री कोमल तथा उसके प्रचन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

ग्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, ग्रौद्योगिक विवाद श्रिष्टिनियम, 1947, की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रिष्ठसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उनेत श्रिष्ठिनियम की श्रीरा 7 के श्रिष्ठीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उन्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा संवंधित मामला है:—

क्या श्री कोमल, पुत्र श्री राम बिलास की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

संब्झोबिब /एफ.डी. /228-6/15334 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. विमकी आटो मैंटल, 2-के/44 वी.पी. एन.आई.टी., फरोदाबाद, के अभिक श्री ए.एम. सागर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई औद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, झब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिष्टिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के छण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्टिस्त्वना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए प्रिष्टिस्त्वना (सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के श्रिष्टीन गठित श्रम न्यायालम, फरीदावाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायालिय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिश्ट करते हैं जो कि उनत प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री, ए.एम. सागर, पुत्रश्री एच.एल. सागर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस, राहत का हकदार है ?

सं श्रो नि /एफ.डी./18-86/15340.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. तुसीबा, 1-12डी.एल.एफ. इण्डस्ट्रीयल ऐरिया, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री बाच्चा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भौर ुंचूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछकीय सँमझते हैं ;

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद मिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए इरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मिधिसूचना सं. 5415-3-अम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादमस्त् या उससे सुनंगत या उससे सन्वविधा नीचे लिखा भूमामला न्यायानिर्णय एवं पंचाद हैंतीन मास में देने हेंतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादमस्त सामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय ेत् तिर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 को उप धारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरेकारी अधिसूचना सं03(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1985 हैं होरा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री पवन कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वंह किस राहत का हकदार है ?